Indian e-Journal on Teacher Education (IEJTE)
Bi-Monthly e-Journal (Peer Reviewed)
ISSN 2320 –7566

नई शिक्षा निती का साहित्य मूल्य

प्रा. डॉ.पुरुषोत्तम गुणवंतराव पखाले

मातोश्री अंजनाबाई मुंदाफळे समाजकार्य
महाविद्यालय नरखेड, जि. नागपूर

==========

प्रस्तावना : (Introduction)

नई शिक्षा नीति में नए स्कूल को चलाने की योजना बनाई गई है। नई शिक्षा नीति में ऐसी परिकल्पना की गई है कक्षा में नए पाठ्यक्रम के माध्यम से बच्चे को दूसरी भाषा सीखना शुरू करना चाहिए। और यह परीक्षा उसके लिए अनिवार्य होगी । और उसे यह कौशल दिया जाएगा कि वह किस विषय के अनुसार लिखेगा, किस विषय का अध्ययन करना चाहिए ? नई शिक्षा नीती इस मे नई स्कूल संचालित करने का फैसला किया है । " शिक्षा के क्षेत्र मे यह एक एसा ताना –बाणा है जिसके माध्यम से बहुसंख्यांक जनसंख्या के प्रगती के मार्ग व्यवधान किया हूआ है।"[1] पिछडा वर्ग और डॉ. आंबेडकर : स्वरूप चंद,भारतीय बौध्दमहासभा दिल्ली प्रदेश नई दिल्ली110055 पृष्ठ 50 शिक्षा प्री स्कूल से हायस्कूल का नियोजन किया हुआ है। इस नये शिक्षा नीती मे बच्चो को वाचन लेखन गणित के कौशल्य है। मूलभूत कौशल्य कोनसे होनी चाहिये, नोकरी संबंधित छठवी कक्षा से ऐसा अनुमान शिक्षा नीती मे बनाया गया है। उनको और दुसरी भाषा पढना सुरू होणा चाहिये। नई शिक्षानीती के माध्यम से बच्चो की परीक्षा ही देना उसके लिए अनिवार्य रहेगा इसके साथ उसका मूल्यांकन करने के लिए स्किल उसमे दिया जायेगा। जैसा की इच्छा अनुसार कोनसे सब्जेक्ट कोनसे विषय नही लेना है । पढाई कौन से सब्जेक्ट से लेकर करना है ये सभी का स्किल दिया जाना चाहिए।

मुद्याचे विश्लेषण : (Subject)

स्थानीय भाषा का महत्व: नई शिक्षा नीति में स्थानीय भाषा को महत्वपूर्ण स्थान दिया गया है और उसी भाषा के अनुसार पांचवीं कक्षा तक मुफ्त शिक्षा प्रदान की जाएगी।

छात्र मूल्यांकन: छात्र मूल्यांकन के नए तरीके छात्रों का मूल्यांकन करने के नए तरीके नए परीक्षण लेने का पारंपरिक तरीका है, नई सोच का उपयोग करने के बजाय, परियोजना-आधारित मूल्यांकन अब आसानी से संभव है।

स्कूल **कॉलेज विकास की उम्मीद:** नई शिक्षा नीति ने नए शैक्षिक अवसर पैदा किए हैं और कॉलेज छात्रों और कॉलेज विकास में वृद्धि की उम्मीद है। आप कॉलेज में कोई भी विषय ले सकते हैं, जिस विषय का आपको अधिक ज्ञान है, या जिस विषय में आपकी रुचि है, एक कॉलेज से पढ़ाई करते समय आप अपनी इच्छानुसार उसी प्रकार और उसी बैच के विषय दूसरे कॉलेज से ले सकते हैं। एक कॉलेज से दूसरे कॉलेज में ट्रांसफर करना आसान हो गया है

क्रेडिट बेस्ट सिस्टम लागू: नई शिक्षा नीति में छात्रों को पास होने के लिए आवश्यक अंक अनिवार्य थे, लेकिन नई शिक्षा नीति में इसके स्थान पर क्रेडिट बेस्ट सिस्टम लागू किया गया है।

एक विश्वविद्यालय में महाविद्यालयों की संख्या कम होना: 1982 की शिक्षा नीति के अनुसार एक विश्वविद्यालय बनाकर कई प्रकार के महाविद्यालयों की संख्या कम करने के लिए इन विश्वविद्यालयों में विद्या

महाविद्यालय बनाये गये, इस महाविद्यालय के माध्यम से कई प्रकार के पाठ्यक्रम संचालित किये जाते हैं संख्या, एक नई शिक्षा के बारे में सोचा गया है और अगले पंद्रह वर्षों में एक ही विश्वविद्यालय में कॉलेजों की संख्या कम की जा रही है और यह माना जा रहा है कि २०३५ तक कई प्रकार के स्वतंत्र विश्वविद्यालयों को मान्यता दी जाएगी।

शिक्षा का सार्वभौमीकरण और एकीकरण: शिक्षा धारा का सार्वभौमीकरण और एकीकरण नई शिक्षा नीति 2030 तक हरएक भारतीय लड़के और लड़की को शिक्षा का अवसर प्रदान करने के लिए समग्र शिक्षा नीति में एक महत्वाकांक्षी बदलाव की परिकल्पना करती है।

चिकित्सा शिक्षा व्यावसायिक शिक्षा और इंजीनियरिंग शिक्षा: नई शिक्षा नीति के कारण चिकित्सा शिक्षा व्यावसायिक शिक्षा और सोशल इंजीनियरिंग की धाराओं के बीच की सख्त सीमाएं टूट गई हैं, इस विषय के छात्र कई विषयों के माध्यम से चिकित्सा या व्यावसायिक शिक्षा का अध्ययन कर सकते हैं, जिससे सभी शाखाओ की सीमाएं धुंधली हो गई हैं.

डिजिटल पारदर्शिता: नई शिक्षा नीति में डिजिटल पारदर्शिता लाने और पाठ्यक्रम में नई तकनीकों का उपयोग कर नई तकनीकों की क्षमता को पहचानने और उस पाठ्यक्रम को उच्च गुणवत्ता मूल्यांकन में लाने का प्रयास किया गया है।

रिसर्च पर जोर: नई शिक्षा नीति में रिसर्च पर जोर दिया गया है और चौथे साल की डिग्री रिसर्च पर आधारित होगी और इसमें पूरी प्रोजेक्ट रिपोर्ट होगी जो विषय पर आधारित होगी. "पिछडे वरगो के दशाये के अनुसंधान के लिय अनुसंधान आयोग नियुक्ती का आदेश दिया है।" [४] पृष्ठ क्र.१८

समग्र दृष्टिकोण और समावेशिता: समग्र दृष्टिकोण और समावेशिता का उद्देश्य शैक्षिक रूप से वंचित सभी लड़कों और लड़कियों की मदद के लिए धन उपलब्ध कराकर प्रत्येक बच्चे की समस्याओं को हल करने का प्रयास करना है। नई शिक्षा नीति सामाजिक और **आर्थिक रूप से समावेशी प्रतीत नहीं होती** है क्योंकि यह जिकरण को बढावा देती है इसलिए डॉ. मनोहर नाईक काहते है, "ही नवीन शैक्षणिक धोरण बहुजणाच्या शिक्षण बंदीचा येणाऱ्या पिढ्यांच्या .. जाहीरनामा आहे." [३] नवीन शैक्षणिक धोरणाचा पंचनामा: डॉ. मनोहर नाईक , युगासाक्षी प्रकाशन नागपूर २०२२ पृष्ठ क्र.८

अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर नई शिक्षा नीति : अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर नई शिक्षा नीति के कारण भारत को एक शिक्षा के कारण अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर एक निश्चित पहचान मिली है और भारतीय शिक्षा के प्रति अंतर्राष्ट्रीय दृष्टिकोण में कुछ छात्रों की भारतीय शिक्षा में रुचि बढ़ी है।

संरचना: नई शिक्षा नीति में दी गई संरचना 5+3+3+4 है। उनमें से कुछ ने पाठ्यक्रम की संरचना में भारी बदलाव किया है, अगर हम छोटे बच्चों के नजरिए से सोचें तो पांचवीं कक्षा तक की शिक्षा एक साथ और इसमें तीन कक्षाएं यानी आठवीं तक की तीन कक्षाएं और एक समूह शामिल है। नौवीं से बारहवीं कक्षा तक स्नातक तक की शिक्षा चार वर्ष की मानी जाती है। डिग्री के चौथे वर्ष में शोध पर अधिक जोर दिया जाता है। डिग्री को समूहीकृत करके शिक्षा को चार वर्ष का माना जाता है, डिग्री का चौथा वर्ष अनुसंधान पर अधिक केन्द्रित होता है। **80% तक एक जैसा सिलेबस:** नई शिक्षा नीति में राज्य और केंद्र सरकार का सिलेबस 80% तक एक जैसा होना आसान हो गया है. यूपीएससी और एमपीएससी के अंतर्गत विभिन्न पदों और उनके पाठ्यक्रम की पारदर्शिता इस डिग्री पाठ्यक्रम में परिलक्षित होती है।

मूल्यांकन : (Evaluation)

नए शिक्षा बांध के कुछ महत्वपूर्ण मूल्यांकन नीचे दिए गए हैं

इसमें स्थानीय भाषा की आवश्यकता के कारण लगातार स्थानीय भाषा में अध्ययन करना अनिवार्य हो जाता है, इसलिए जो छात्र कई भाषाएँ सीखना चाहते हैं, वे कई भाषाओं में शिक्षा प्राप्त नहीं कर पाएंगे। दूसरी भाषा की आवश्यकता के बावजूद दूसरी भाषा में सीखने में असमर्थता यहां की कमी है

चुनौतियां सामने आ रही हैं। नई शिक्षा नीति को लागू करने के मामले में **चुनौतियां सामने आ रही हैं**, सबसे पहले अगर हम कॉलेज में क्लस्टर सिस्टम के कार्यान्वयन पर नजर डालें तो कुछ कॉलेज इस **क्लस्टर सिस्टम के कारण** एक साथ आ गए हैं, जबकि कुछ कॉलेजों को अवसर नहीं मिल पाया है। अभी तक एक साथ आने की समस्या का समाधान नहीं हुआ है

नई डिजिटल तकनीक के प्रयोग के कारण कॉलेज स्टाफ के बीच नई तकनीक के प्रयोग की कुशलता और उसकी उपयोगिता को लेकर कुछ शंकाएं पैदा हो गई हैं, जिनका समाधान अभी तक नहीं हो पाया है।

नई शिक्षा नीति में कौशल और उचित प्रशिक्षण की कमी के कारण हर कॉलेज में व्यावसायिक प्रशिक्षण की गुणवत्ता खराब होती देखी जा रही है।

वित्तीय पहलू पर विचार । जिस महाविद्यालय में नई शिक्षा नीति प्रारंभ की गई है, वह महाविद्यालय नई शिक्षा नीति को लागू कर रहा है तथा इसके वित्तीय पहलू पर विचार कर रहा है, नई शिक्षा नीति लागू करनेमे में सुविधाओं का अभाव है तथा महाविद्यालय को नई शिक्षा नीति उपलब्ध कराने के लिए समय की आवश्यकता है अपर्याप्त बुनियादी ढांचे पर विचार करते हुए नई शिक्षा नीति को लागू कानेके लिए कुछ अवसर देना जरूरी है.

नई शिक्षा नीति सामाजिक और **आर्थिक रूप से समावेशी प्रतीत नहीं होती** है क्योंकि यह शिक्षा नीति निजीकरण पर जोर देती है और तेजी से निजीकरण आर्थिक रूप से वंचित और आर्थिक रूप से वंचित छात्रों के शैक्षिक भविष्य को खतरे में डालता है जिनके पास धन हो सकता है वही लोंग के बच्चे स्कूल कॉलेज जासकते है या जिनके पास केवल शिक्षा शुल्क की व्यवस्था हो वही छात्र हैं जो शिक्षा तक पहुंच सकते हैं फीस भरने से शिक्षा प्राप्त कर सकेंगे, अन्य छात्र शिक्षा से वंचित रह जायेंगे। क्या ऐई से छात्र के के लिय "यह सच है की, हमारा 85 प्रतिशत भारत गरीब है, भुखा है,नंगा है, बेघर और लाचार है. और 15 प्रतिशत सवर्ण लोंग धन की उबकाई करते है,और ऊनके कुत्ते कारो मे सफर करते है।"[5] मुलनिवासी पर आक्रमण : एस एल सागर, मनोविकास प्रकाशन नागपूर २०१३, पृष्ठ क्र.6

शिक्षकों में कौशल का होना जरूरी है नई शिक्षा नीति को लागू करते समय शिक्षकों में कौशल का होना जरूरी है, कौशल को पूरा करने के लिए कई तरह के प्रशिक्षण वर्ग को लागू करना जरूरी है, लेकिन चूंकि इस प्रशिक्षण वर्ग को सरकार द्वारा कोई मंजूरी नहीं दी गई है, इसलिए शिक्षक ऐसा नहीं कर सकते हैं. नई शिक्षा नीति में कौशल की कमी के कारण नई शिक्षा नीति को प्रभावी ढंग से लागू करना।

नई शिक्षा नीती पर अभितक संहित्यकारोने लिखाना शूरु करना बाकी है।

निष्कर्ष : (Conclusion):

नई शिक्षा नीति में गुणवत्तापूर्ण विश्वविद्यालय और कॉलेज बनाए जा सकते हैं ताकि इन कॉलेजों को विश्वविद्यालय का दर्जा मिल सके

जिन संस्थानों में एकल महाविद्यालय अस्तित्व में आ गया है, उन्हें पुनर्गठित कर उस महाविद्यालय में पढ़ने वाले विद्यार्थियों को आर्थिक रूप से मजबूत बनाना महत्वपूर्ण होगा।

एक ही कॉलेज में व्यापक और बहु-विषयक शिक्षा की कई डिग्रियां प्रदान करने और उन डिग्रियों का विस्तार करने में सक्षम एक कॉलेज बनाया जाएगा।

कॉलेजों को विश्वविद्यालय का दर्जा मिलने के बाद उन्हीं कॉलेजों में कई तरह की शिक्षा के अवसर पैदा हो सकेंगे और छात्रों को गुणवत्तापूर्ण शिक्षा प्रदान की जा सकेगी

नई शिक्षा नीति में सर्वेश्वरवाद की अवधारणा पेश की गई है और समावेशिता और समानता पर आधारित शिक्षा के मूल्य को बनाए रखना अनिवार्य होगा।ताकी " स्वातंत्रा के उपरांत अमीर और गरीब के बईव्ह की शिक्षा के क्षेत्र मे असमानता के नियोजित ठाणे बाणे ने एक नई साजिश का रहस्यो उडघाटण किया है जिससे अंतर्गत अमीर और गरीब मे शिक्षा के क्षेत्र मे असमनताने संपूर्ण दलित और ओबीसी को अलग अलग करके कगारपर खडा कर दिया है।" [6] पिछडा वर्ग और डॉ. आंबेडकर : स्वरूप चंद,भारतीय बौध्दमहासभा दिल्ली प्रदेश नई दिल्ली110055 पृष्ठ 50

नई शिक्षा नीति का मुख्य उद्देश्य शिक्षा को अंतरराष्ट्रीय स्तर पर पहचान दिलाना, ऐसी शिक्षा पर शोध करना और गुणवत्तापूर्ण शिक्षा को प्राथमिकता देना है

नई शिक्षा नीति का उद्देश्य भारतीय भाषा, कला और पारंपरिक संस्कृति को बढ़ावा देकर भारतीय संस्कृति को पांचवां विश्व मंच प्रदान करना है।

नई शिक्षा नीति में ऑनलाइन और ऑफलाइन शिक्षा प्रणाली को अपनाया गया है और यह देखा जा सकता है कि सरकार इन दोनों तरीकों से शिक्षा पाठ्यक्रम को आगे बढ़ाने की कोशिश कर रही है।

नई शिक्षा नीति में अभी तक साहित्य का आविष्कार नहीं हुआ है, बल्कि किसी भी प्रकार के साहित्य का सृजन करना है, क्योंकि यह धारणा प्रचलित है कि जब तक समाज में साहित्य का आविष्कार नहीं होगा, तब तक साहित्य को समाज में उचित स्थान नहीं मिल सकता है। साहित्य कारोका लिखाना उतनीही अहमियत रखता है जितनी नि शिक्षा नीती लागू करना.

सार : (Essence)

नई शिक्षा निती के बारे अत: ऐसा नहीं दिखता कि साहित्य अभी तक किसी प्रकार के साहित्य सृजन की ओर अग्रसर हुआ हो।

संदर्भ :

1- पिछडा वर्ग और डॉ. आंबेडकर : स्वरूप चंद,भारतीय बौध्दमहासभा दिल्ली प्रदेश नई दिल्ली110055 पृष्ठ 50
2- नवीन शैक्षणिक धोरण २०२०
3- नवीन शैक्षणिक धोरणाचा पंचनामा: डॉ. मनोहर नाईक , युगासाक्षी प्रकाशन नागपूर २०२२ पृष्ठ क्र.८
4- तंत्रेव पृष्ठ क्र.१८
5- मुलनिवासीयोपर आक्रमण : एस एल सागर, मनोविकास प्रकाशन नागपूर २०१३, पृष्ठ क्र.6
6- पिछडा वर्ग और डॉ. आंबेडकर : स्वरूप चंद,भारतीय बौध्दमहासभा दिल्ली प्रदेश नई दिल्ली110055 पृष्ठ 50